प्रकाशन की तिथि 01.12.2018

ओ३म्

एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

स्वामी श्रद्धानन्द

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथर्ववेद 12.1.12
भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

पं. मदनमोहन मालवीय

वर्ष 41 अंक 12

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये
आजीवन शुल्क : 500 रुपये

दिसम्बर 2018 विक्रम सम्वत् 2075 भाद्रपद-आश्विन

सनातन धर्मी नेता - पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23857244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री चतर सिंह नागर ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

शुद्धि आन्दोलन के पुरोधा

स्वामी श्रद्धानन्द

स्वामी श्रद्धानन्द ऋषि दयानन्द के सच्चे अर्थों में उत्तराधिकारी थे। ऋषि के जो आदर्श मन्तव्य, चिन्तन और धारणाएं थीं उन्हें स्वामी श्रद्धानन्द ने क्रियात्मक साकार रूप दिया। अपने गुरु के प्रति स्वामी श्रद्धानन्द जी की निष्ठा, लगन एवं समर्पण प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय था। स्वामी जी का धर्म-शिक्षा, राजनीति, समाज सेवा आदि प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने दलितोद्धार एवं शुद्धि आन्दोलन को जो बल, प्रेरणा, भावना और महत्व दिया वह उल्लेखनीय व स्मरणीय है। स्वयं स्वामी जी ने रायसाहब शारदा जी से कहा था- 'मैंने शेष जीवन के लिए अन्तिम प्रोग्राम अछूतोद्धार शुद्धि और संगठन ही निश्चय किया है। इसके बिना आर्य जाति जीवित नहीं रह सकती है। उनके द्वारा संचालित शुद्धि यज्ञ का चक्र देश के कोने-कोने में तेजी से चला। जो जन स्वधर्म, स्वदेश, स्वभाषा एवं एक संस्कृति से विमुख हो रहे थे, उन्हें स्वामी जी ने पुनः शुद्धि द्वारा गले लगाया। ये अज्ञान, भ्रम, लोभ, लालच तथा बहकाने से स्व स्वरूप को भूल चुके थे। इनके लिए वैदिक चिन्तन के द्वार खुले हैं। इनसे घृणा, द्वेष मत करो। ये दया और सहानुभूति के पात्र हैं। ये हमारे भूले-भटके, हमारे ही भाई बहन हैं। इन्हें शुद्धि के द्वारा पुनः नवजीवन की प्रेरणा देनी है। तभी हमारे यह नारे कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, सर्वे भवन्तु सुखिनः, वसुधैव कुटुम्बकम्, सर्वा आशा मम मित्रं 'भवन्तु' पूरे होंगे। हम सब एक पिता प्रभु की सन्तान हैं। हमारा पालन-पोषण, प्रकृति प्रदत्त साधन, जलवायु, अग्नि, तेज, प्रकाश, वनस्पति, खानपान समान हैं फिर परस्पर भेद कैसा? ऊंच-नीच, भेद भाव क्यों? मानव मानव के बीच दीवार कैसी? मनुष्य को पशुओं से भी निकृष्ट क्यों समझा जाता है?

क्यों नहीं उसे तो पतित हो गया, दलित बन गया, विधर्मी होकर जी रहा है, उसे ऊपर उठाने का अवसर दिया जाता है। यह वेदना स्वामी श्रद्धानन्द को निरन्तर सताती रहती थी। वे निरन्तर शुद्धि आन्दोलन को व्यापक, व्यावहारिक और गतिशील बनाने के लिए अधीर, आकुल व दीवाने रहते थे। उन्हें मारने की कई बार धमकियां मिल चुकी थीं। उनके इस शुद्धि व दलितोद्धारक चिन्तन एवं आन्दोलन से तत्कालीन बड़े-बड़े राजनेता, देश के

तथाकथित धर्माचार्य, असन्तुष्ट तथा नाराज रहते थे। किन्तु धुन के धनी, संकल्पी, प्रभु भक्त, निर्भीक स्वामी श्रद्धानन्द अपने शुद्धि अभियान को निरन्तर आगे बढ़ाते रहे। यहां तक कि उन्हें अपने प्राण भी इसी शुद्धि महायज्ञ में आहुत करने पड़े। किन्तु वे अमृतपुत्र होकर जीए। उन्हें मृत्यु सत्पथ से विचलित नहीं कर सकी। वे किसी विधर्मी के भय, डर से भयभीत नहीं हुए। उनका तो यही नारा और सन्देश था-

दलित आ जा, पतित आ जा, तृषित आ जा मिल न पाया, जिनको प्यार, उनको प्यार देना है।

उनके हृदय में दीनों-हीनों, पतितों, दलितों आदि के लिए अपार प्रेम, दया, करुणा थी। वे शुद्ध हृदय से मुसलमानों, ईसाइयों को गले लगाकर उन्हें आर्य धर्म में दीक्षित करना चाहते थे। यही उनकी अन्तिम इच्छा थी जैसा कि उन्होंने अपने सहयोगी स्वामी चिदानन्द से पत्र लिखवाया था, उसमें चर्चा की है। यही उनकी अन्तिम इच्छा थी जैसा कि उन्होंने अपने सहयोगी स्वामी चिदानन्द से पत्र लिखवाया था, उसमें चर्चा की है।

"मेरा यह शरीर इस योग्य नहीं रहा कि जिससे कोई काम ले सकूं। इसलिए अब तो मेरी यह कामना है कि इस पुराने शरीर को छोड़कर दूसरा शरीर धारण करूं और फिर भारत में आकर शुद्धि के द्वारा देश व जाति की सेवा करूं।"

आज की परिस्थिति, सन्दर्भ, हालात और विचार सभी तेजी से परिवर्तित हुए हैं और हो रहे हैं। इस बदलाव और भटकाव में आर्यसमाज के लोग भी मूल ध्येय से हटते हिलते जा रहे हैं। इसी का परिणाम है कि हमारे संगठन, मन्दिर, संस्कार, परिवार एवं व्यक्ति दयानन्द, श्रद्धानन्द और आर्यसमाज के उद्देश्यों के अनुकूल नहीं बन पा रहे हैं? यह प्रश्न चिह्न सर्वत्र चर्चा का विषय है। इस प्रसंग में स्वामी श्रद्धानन्द का अमर स्मारक गुरुकुल कांगड़ी का उदाहरण ही पर्याप्त होगा। जो संस्था संसार को धर्मचरित्र, जीवन, नैतिकता, सदाचार एवं आध्यात्मिकता का सन्देश दे सकती थी वह अपने में एक समस्या बन रही है। अधिक विवेचन अपेक्षित नहीं है। ऐसी विकट स्थिति में जबकि राष्ट्र धार्मिक, राजनैतिक, राष्ट्रीय, सामाजिक, पारिवारिक, वैयक्तिक, शैक्षणिक प्रत्येक दृष्टि से दिशाहीन एवं किंकर्त्तव्यविमूढ़ की हालात से गुजर रहा है। यदि आर्य समाज अपनी अस्मिता स्वरूप, धैर्य, चिन्तन एवं आदिम धरोहर को जाने, माने और पहचाने तो राष्ट्र को दिशा और मोड़ दे सकता है। यह तभी सम्भव है जब हम आर्यसमाज दयानन्द, श्रद्धानन्द और हंसराज के अनुयायी, ईसाई मुसलमानों की शुद्धि से पहले अपनी आत्मशुद्धि का व्रत व संकल्प लें। आत्मनिरीक्षण करें। इन दोषों को मजबूती से पकड़ें। प्रेरक महापुरुषों के व्यक्तित्व और कृतित्व से सेवा, त्याग, उपकार, विनम्रता का पाठ पढ़ें। संगठन, संस्था, मन्दिर एवं समाजों में मात्र सेवा, त्याग को महत्त्व दिया जाए। धन बल, जनबल, संगठन बल स्वतः खिंचा चला आएगा। आज आर्यसमाज को प्रेरक, आदर्श, धर्मवान, चरित्रवान, त्यागी, सेवा भावी लोगों की बड़ी आवश्यकता है। स्वामी श्रद्धानन्द का यह वाक्य बड़ा ही सटीक एवं मजबूत है। आज आर्यसमाज को नेताओं की नहीं, सेवकों की जरुरत है। कैसी विचित्र विडम्बना है कि इतने स्कूल, कॉलेज, गुरुकुल, संगठन, आश्रम हैं, किन्तु एक भी हंसराज, श्रद्धानन्द, गुरुदत्त, लेखराम, दर्शनानन्द नहीं बन सका? सोचो, विचारो और सच्चे अर्थ में आर्यत्व के गुण, कर्म, स्वभाव को लाने का संकल्प करो। स्वामी श्रद्धानन्द जैसा अद्भुत चरित्र हमारी धरोहर है, इतना गिरकर, इतना ऊपर उठ सकता है मानव, यह प्रेरणा स्वामीजी का जीवन पुकार-पुकार कर दे रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द का स्वप्न अधूरा है। उनकी अन्तिम इच्छा भटका रही है। बलिदान दिवस हर वर्ष मनाते हैं। किन्तु, परन्तु, लेकिन-कुछ सीख नहीं ले पाते हैं? यही कमी है। उनके शुद्धि आन्दोलन को तन, मन, धन से आगे बढ़ाना है। मानवता, प्रेम, दया, करुणा सहानुभूति के व्यवहार से सबको अपना बनाना है। जो विधर्मी हमारे भाई बहनों को लोभ लालच, बलात्, वर्ग भेद, जाति भेद, भाषा, सेवा प्रेम इत्यादि के नाम पर हम से अलग कर रहे हैं उनके पास जाना होगा। उन्हें अपनाना होगा। आर्यसमाज के अतिरिक्त कोई इस जटिल कार्य को नहीं कर सकता है। यही स्वामी श्रद्धानन्द की अन्तिम इच्छा थी। "देखो मैं रहूं या न रहूं, किन्तु मेरे बाद शुद्धि का काम बन्द न होने पाए।"

-डॉ. महेश विद्यालंकार

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सम्पादकीय

-आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

महर्षि दयानन्द के दुःखद निधन के पश्चात् उनके अधूरे कार्यों को जिन लोगों ने प्राणार्पण के साथ पूरा करने का संकल्प लिया, उनमें महात्मा मुंशीराम आगे चलकर स्वामी श्रद्धानन्द जी का स्थान अप्रतिम है। अपने दृढ़ संकल्प और कठोर तपश्चर्या से वे तत्कालीन भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक परिवेश को परिशुद्ध कर भारतीय वैदिक अवधारणा के अनुकूल राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के महनीय प्रयास में सर्वात्मना समर्पित हो गये। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने देश के तत्कालीन राष्ट्रनायकों के साथ सामञ्जस्य स्थापित कर उन्हें सामाजिक तथा राष्ट्रीय चेतना की वेदाधारित मानसिकता से परिचित कराया और स्वयं उसका सफल नेतृत्व किया। उन्होंने नई पीढ़ी को संस्कार सम्पन्न बनाने के लिए भारतीय शिक्षा को गुरुकुल प्रणाली द्वारा पुष्पित-पल्लवित करने का सकारात्मक प्रयास किया जिसकी तत्कालीन सभी नेताओं ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। इनमें दीनबन्धु एण्ड्रयूज, महात्मा गाँधी, पण्डित मदन मोहन मालवीय, जवाहर लाल नेहरु आदि प्रमुख हैं। सदाचार तथा धार्मिक निष्ठा से संस्कारित गुरुकुल के स्नातकों ने राष्ट्रीय स्वाधीनता के बृहद् यज्ञ में अपनी आहुतियाँ प्रदान की जिसे भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास कभी भुला नहीं सकता। सामाजिक-धार्मिक मतभेद को समाप्त कर राष्ट्र को परम वैभव के शिखर पर आरुढ़ करने हेतु उन्होंने हिन्दु-मुस्लिम एकता को सुदृढ़ करने का प्रयास किया। भय और बलात् विधर्मी बने अवैदिक, सांप्रदायिक, पथभ्रष्ट लोगों को राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए उन्होंने हिन्दुओं के तत्कालीन सर्वमान्य नेता पण्डित मदन मोहन मालवीय के साथ मिलकर अखिल भारतीय हिन्दु शुद्धि सभा की स्थापना की। अपने विश्वसनीय क्रिया-कलाप और तेजस्वी व्यक्तित्व से उन्होंने सबके हृदयों में अपने लिए सम्मान्य स्थान बना लिया था। भारतीय जनता में उनके प्रति इस अपार प्रेम को देखकर तत्कालीन अंग्रेज शासक उनसे सदा घबराते थे। परिणाम स्वरूप स्वामीजी तथा उनका गुरुकुल हमेशा विदेशी शासकों में शंका की दृष्टि से देखा जाता था। किन्तु स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कभी इन चीजों की परवाह नहीं की। वे सदा आर्य समाज तथा भारत राष्ट्र की आराधना में समर्पित रहे। कर्तव्य पथ पर चलते हुए उस वीर संन्यासी को किसी भी तरह की भय की भावना छू तक न सकी। दिल्ली के "टाउन हॉल" में जनता का नेतृत्त्व करते हुए अंग्रेजी सिपाहियों की संगीनों के सामने सीना खोलकर उनका यह चुनौती देना कि जनता से पहले साहस हो तो मुझे गोली मार दो, उनके आत्मबल का प्रबल प्रमाण है। हिन्दु-मुस्लिम सभी के मन में स्वामीजी के प्रति अद्भुत सम्मान की भावना थी। दिल्ली की प्रसिद्ध जामा मस्जिद से उनका उद्बोधन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। उन्होंने ऋग्वेद का मन्त्र बोलकर अपने उपदेश का प्रारम्भ तथा ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः से समाप्ति की। यह घटना भारत के ही नहीं इस्लाम के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ कि किसी मुसलमानेतर व्यक्ति ने मस्जिद की वेदी से अपना व्याख्यान दिया हो।

23 दिसम्बर सन् 1926 को एक विक्षिप्त विधर्मी के षड्यन्त्र से वह हमें हमेशा के लिए छोड़कर चले गए। हम उनकी पावन स्मृति को नमन करते हुए प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि आर्य जाति को उनके द्वारा दिखाये मार्ग पर चलने की शक्ति दे। स्वामी जी के सुपुत्र स्व. श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति के शब्दों को आर्य जाति को सदा याद रखना होगा, जो उन्होंने अपनी पुस्तक "मेरे पिता" में लिखा है:-

वे शहीद हो गए, पर हमने क्या किया?
श्रद्धांजलि शब्दों में देने से क्या होगा?
कौन चलेगा उनकी राह पर,
कौन करेगा धर्म प्रचार,
श्रद्धा की गंगा कौन बहायेगा।
उत्तर दो.....उत्तर दो.....

श्री अशफाकउल्ला खाँ

यह मस्ताना शायर भी हैरान करने वाली खुशी से (19.12.1927 को) फांसी चढ़ा। सुन्दर और लम्बा-चौड़ा जवान था, तगड़ा बहुत था। जेल में कुछ कमजोर हो गया था। आपने मुलाकात के समय बताया कि कमजोर होने का कारण गम नहीं, बल्कि खुदा की याद में मस्त रहने की खातिर रोटी बहुत कम खाना है। फांसी से एक दिन पहले आपकी मुलाकात हुई। आप खूब सजे-संवरे थे। बड़े-बड़े कढ़े हुए केश खूब सजते थे। बड़ी हंस-हंस कर बातें करते रहे। आपने कहा कल मेरी शादी होने वाली है। दूसरे दिन सुबह छह बजे आपको फांसी दी गयी। कुरान शरीफ का बस्ता लटकाकर हाजियों की तरह बजीफा पढ़ते हुए, बड़े हौंसले से चल पड़े। आगे जाकर तख्ते पर रस्सी, को चूम लिया। वहीं आपने कहा-

मैंने कभी किसी आदमी के खून से अपने हाथ नहीं रंगे और मेरा इन्साफ खुदा के सामने होगा। मेरे ऊपर लगाये गये इल्जाम गलत हैं। खुदा का नाम लेते ही रस्सी खींची गयी और वे कूच कर गये। उनके रिश्तेदारों ने बड़ी मिन्नतों-खुशामदों से उनकी लाश ली

और उन्हें शाहजहाँपुर ले आये। लखनऊ स्टेशन पर मालगाड़ी के एक डिब्बे में उनकी लाश देखने का अवसर कुछ लोगों को मिला। फांसी के दस घण्टे बाद भी चेहरे पर वैसी ही रौनक थी। ऐसा लगता था कि अभी ही सोये हों। लेकिन अशफाक तो ऐसी नींद में सो गये थे कि जहाँ से वे कभी नहीं जागेंगे। अशफाक शायर थे और उनका शायर हसरत था। मरने से पहले आपने ये दो शेर कहे थे-

फनाह है हम सब के लिए हम पै कुछ नहीं मौकूफ।
वका है एक फकत जाने की ब्रिया के लिए।।

(नष्ट तो सभी होंगे, कोई हम अकेले थोड़े होंगे। न मरने वाला तो सिर्फ एक परमात्मा है।) और

तंग आकर हम उनके जुलम से बेदाद से।
चल दिये सूए अदम जिन्दाने फैजाबाद से।।

श्री अशफाक की ओर से एक माफीनामा छपा था, उसके सम्बन्ध में श्री रामप्रसाद जी ने अपने आखिरी एलान में पोजीशन साफ कर दी है। आपने कहा कि अशफाक माफीनामा तो क्या, अपील के लिए भी राजी नहीं थे। आपने कहा था मैं खुदा के सिवाय किसी के आगे झुकना नहीं चाहता। परन्तु रामप्रसाद के कहने-सुनने से अपने से आपने वही सब कुछ लिखा था। वरना मौत का उन्हें कोई डर या भय नहीं था। उपर्युक्त हाल पढ़कर पाठक भी यह बात समझ सकते हैं। आप शाहजहाँपुर के रहने वाले थे और आप श्री रामप्रसाद के दायें हाथ थे। मुसलमान होने के बावजूद आपका कट्टर आर्यसमाजी धर्म से हर दर्जे का प्रेम था। दोनों प्रेमी एक बड़े काम के लिए अपने प्राण उत्सर्ग कर, अमर हो गये।

- नरेन्द्र मोहन वलेचा

"पत्थर होते लोग"

ठंड में ठिठुरते लोग
खुद को सिकोड़कर
ओढ़ते लोग
सड़क किनारे कांपते
हड्डी गलाती ठंड
तापने को शेष कुछ नहीं
बुझ चुकी आग
राख मलकर मरते लोग
वातानुकूलित कक्ष में
मलमल ओढ़कर
सोते लोग
सुबह अखबार में पढ़कर
आश्चर्य करते
ठंड से कैसे मर जाते हैं लोग?
शिशु दूध पीता रहा
भूख, बीमारी से सड़क
किनारे मृत स्त्री देह
आह कितना विशाल माँ का प्रेम
फोटो खींचकर सोशल मीडिया
पर डालते लोग।
लाइक करो, शेयर करो
विश्व फोटोग्राफी प्रतियोगिता में,
पुरुस्कार देते लोग।
व्यथित नहीं होता कोई
घटना-दुर्घटना में मरने पर
हत्या, आत्महत्या, बलात्कार
रोज की खबरें हैं
धीरे-धीरे पत्थर होते लागे।

-देवेन्द्र कुमार मिश्रा

मतान्तरण का षड्यन्त्र

भारत में आज से ही नहीं तुर्क, मंगोल, पठानों अरबों के आक्रमणों से ही मतान्तरण का अन्धा व घिनौना खेल हो रहा है। मोहम्मद बिन कासिम इल्तुत मिश, बाबर, गौरी, गजनवी तैमूर लंग आदि ऐसे दरिन्दे थे जिन्होंने बलात मत परिवर्तन ही नहीं अपितु महिलाओं के साथ बलात्कार कर हत्याऐं की। लाखों वृद्ध, स्त्री, पुरुष व असहाय बच्चों की भी निर्मम हत्याऐं की। सिकन्दर की सेना ने भी फारस आदि में यही कार्य किए थे। शाह अब्दाली, सिकन्दर लोदी क्रूरतम हत्यारे थे औंरगजेब ने बलात मतान्तरण का कुत्सित खेल यहां खेला था। मथुरा से सहारनपुर तक के मुसलमान पहले हिन्दू थे, गजनवी ने भारत पर आक्रमण कर तलवार के बल पर यहां मतान्तरण का खूनी खेल खेला था।

आज आर्यसमाज ने उन मतान्तरितों के लिए शुद्धि का दरवाजा खोला हुआ है महर्षि दयानन्द सरस्वती ने शुद्धि को पुनः आरम्भ किया और स्वामी श्रद्धानन्द जी, पं. लेखराम आदि महान् आत्माओं ने इस कार्य को आंधी की भांति चलाया लाखों मतान्तरित आज अपने पुराने हिन्दू धर्म में वापिस आ चुके हैं।

देश की एकता अखण्डता सुख शान्ति के लिए 'शुद्धि' अत्यन्त आवश्यक है प्राचीन काल में तो राज शक्ति का भी सहयोग मिलता था राष्ट्र में स्थिरता हेतु यह अच्छा मार्ग है। आइए शुद्धि जो पुनीत व मानवीय सत्य का मार्ग है उस पर विचार करते हैं। प्राचीन काल एवं मध्यकाल में शुद्धि कार्य होते थे आज भी शुद्धि कार्य की अत्यधिक आवश्यकता है। चौथी सदी ई. पूर्व विधर्मी यवन, किरात, गान्धार, चीन, शवर, बर्बर, शक, तुषार आदि को जो वैश्य शूद्र आदि के कर्मों का अनुसरण करते थे उनके लिए माता पिता की, आचार्य, गुरुओं की व समाज की सेवा के साथ वेद धर्मानुकूल कार्य, यज्ञों का करना, सत्याचरण अहिंसा का पालन करने के लिए उपदेश किया गया है, यह कार्य वेद विरुद्ध लोगों को करने योग्य है क्योंकि यह कर्त्तव्य मनुष्य मात्र के लिए है ऐसा इन्द्र ने मान्धाता को उपदेश किया है विधर्मियों को आर्य धर्म में लाने के लिए सूत्र ग्रन्थों में व्रात्यस्तोम यज्ञ का विधान किया गया है।

चौथी सदी ई. पूर्व से लेकर पांचवी सदी तक आठवीं सदी के विधर्मियों यवन, शक, पल्लव, कुशाण, हूण आदि को आर्य धर्म में मिला लिया गया था। अरबों ने भारत पर आक्रमण कर ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्रों को मुसलमान बनाया जो बल छल बलात्कार नरसंहार आदि द्वारा बनाए गए उनकी शुद्धि का विधान देवल मुनि ने किया है।

देवल स्मृति में शुद्धि का जो विधान है यही याज्ञवल्क्य स्मृति की मिताक्षरा टीका में है मध्य युग में भी शुद्धि कार्य हुए जिसके संकेत विद्यारण्य की पंच दशी में मिलते हैं देवल स्मृति, मिताक्षरा, पंचदशी के ज्ञान से अनेकों शुद्धियां होती रही हैं और अनेकों सहस्त्रों को विधर्मी होने से बचाया गया।

आज हमारा समुदाय इस दृष्टि से संकोच ग्रस्त है हालांकि भारत पाकिस्तान सिन्ध के मुसलमान इनसे पूर्व आर्य (हिन्दू) थे मोहम्मद बिन कासिम, महमूद गजनवी, गौरी बाबर आदि के आक्रमणों से जनता पर अत्याचार कर नर नारियों के चरित्र का हरण किया गया और बलात मत परिवर्तन किए नर संहार का भीषण दृश्य इतिहास पुस्तकों में मिलता है।

आज उस शुद्धि की परम आवश्यकता है शुद्धि अबसे श्रेष्ठ मार्ग है कोई हिंसा नहीं कोई रक्त पात नहीं मानवीय व सहमति पूर्ण भावना है विधर्मी चाहे मुसलमान हो या इसाई जो किन्हीं कारणों से मतान्तरित हुए और वह आर्य हिन्दू ही थे अपने स्व धर्म में आ सकते हैं यह कार्य महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने पुनः आरम्भ कर संगठन व एकता का दीप प्रज्वलित किया था स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने तीव्र गति से चलाया उस समय उत्तर भारत में शुद्धि कार्य आंधी तूफान की गति से हो रहे थे अनेक आर्य इस कार्य में लगे थे।

आज समय है। दो कार्य करने अत्यन्त आवश्यक है, प्रथम तो जो हिन्दू जन हैं उनमें वैदिक धर्म की अलख जगाना क्योंकि अनेक लोग विधर्मियों के बहकाने में आ जाते हैं वहां हिन्दुओं को उनके अन्ध विश्वास कुरीति बुराइयों देवी देवताओं के उदाहरण देकर विधर्मी बनाया जाता है जबकि वैदिक धर्म विश्व में सर्व श्रेष्ठ है वह हिन्दुओं की कुरीतियों बुराइयों का खण्डन मण्डन इस लिए करता है जिससे चहुं ओर सत्य की स्थापना हो। हमें वैदिक धर्म का जन जन में प्रचार करना होगा, छोटे बड़े कार्यक्रम ग्रामों में करते रहें, दूसरे जो मतान्तरित हो गए थे उनको भी वैदिक धर्म की श्रेष्ठता बतानी होगी उनके ईसाई व इस्लाम मतों में अन्ध विश्वास पाखण्ड पूर्ण तथ्य हैं। जिनसे मानवीय भावना आहत होती है सती व बलि प्रथा की भांति अनेक कुरीतियों की भरमार है और ईश्वर के गुणों से विरुद्ध हैं अन्ध विश्वास जादू टोने कब्र मजार पर चादर चढ़ाना गंडा तावीज स्त्री नर्क का द्वार बना रखी है मुताह, हलाला, तलाक पर्दा जैसी कुरीतियों की भरमार है कब्रों पर मोमबत्ती जलाना, मुर्दो को जमीन में दबाना पर्यावरण के विरुद्ध है। भारतीय संस्कृति सर्वोत्तम है उनके पूर्वज हिन्दू थे वह भारतीय संस्कृति को अपना लें यही ईश्वरीय, मानवीय, सत्य का मार्ग है हमें भी शुद्ध हुए लोगों को गले लगाना होगा उन्हें अपने साथ चलाना होगा एक बार उनके अन्तः करण में झांककर देखें और वेद की श्रेष्ठताऐं बताऐ। मीडिया, इन्टर्नेट, और आज अनेक साधन हैं वेद प्रचार के। आओ जितना भी हो सके वेद प्रचार करें जिससे मतान्तरण किए गए व विदेशीयों आक्रमण कारियों द्वारा बलात धर्म परिवर्तितों को हमारे साथ पुनः आने का अवसर तो मिले।

आज अनेक इसाई प्रचारक मतान्तरण का षड्यन्त्र कर रहे है जौनपुर का दुर्गा यादव चंगाई जादू टोना कर रहा है ऐसा ही एक छद्म चर आशु बाबा बनकर दिल्ली में जनता के साथ खिलवाड़ कर रहा था। इसका तो वास्तविक नाम आसिफ खान है ऐसा ही चांद मियां था हमें इनसे सावधान रहना होगा। सत्यासत्य का मार्ग बताना होगा। घर घर वेद की ज्योति जगानी होगी।

–डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह,
चन्द्र लोक कालोनी, खुर्जा

पिता का पत्र–पुत्र के नाम

चि. बसन्त,

यह जो लिखता हूँ उसे बड़े होकर और बूढ़े होकर भी पढ़ना। अपने अनुभव की बात करता हूँ। संसार में मनुष्य जन्म दुर्लभ है। यह सच बात है और मनुष्य जन्म पाकर जिसने शरीर का दुरुपयोग किया वह पशु है। तुम्हारे पास धन है, अच्छे साधन हैं। उनका सेवा के लिये उपयोग किया तब तो साधन सफल है। अन्यथा वे शैतान के औजार हैं। तुम इतनी बातों का ध्यान रखनाः–

1. धन का मौज–शौक में कभी उपयोग न करना। रावण ने मौज–शौक की थी, जनक ने सेवा की थी। धन सदा रहेगा भी नहीं इसलिए जितने दिन पास में है उसका उपयोग सेवा के लिए करो। अपने ऊपर कम से कम खर्च करो। बाकी दुखियों का दुःख दूर करने में व्यय करो।
2. धन शक्ति है। इस शक्ति के नशे में किसी के साथ अन्याय हो जाना सम्भव है इसका ध्यान रखो।
3. अपनी संतान के लिए यही उपदेश छोड़कर जाओ यदि बच्चे ऐश आराम वाले होंगे तो पाप करेंगे और व्यापार को चौपट करेंगे। ऐसे नालायकों को धन कभी न देना। उनके हाथ में जाये उससे पहले ही गरीबों में बाँट देना। क्योंकि तुम यह समझना कि तुम न्यासी हो और हम भाइयों ने व्यापार को बढ़ाया है तो यह समझकर कि तुम लोग धन का सदुपयोग करोगे।
4. सदा यह ख्याल रखना कि तुम्हारा यह धन जनता की धरोहर है। तुम उसे अपने स्वार्थ के लिए उपयोग नहीं कर सकते।
5. भगवान् को कभी न भूलना, वह अच्छी बुद्धि देता है।
6. इन्द्रियों पर काबू रखना वरना यह तुमको डुबा देंगी।
7. नित्य नियम है व्यायाम करना।
8. भोजन को दवा समझकर खाना। जो स्वाद के वश में होकर खाते हैं वे जल्दी मर जाते हैं और न काम कर पाते हैं।

–घनश्यामदास बिरला

(प्रेषक : देवराज आर्य मित्र)

वेद मूर्ति पण्डित श्री श्रीपाद राव दामोदर सातवलेकर

हमारी पृथ्वी हमारे सौर परिवार का एक मात्र ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन है प्रकृति है। हमारे ग्रह पर प्रकृति ईश्वर के सर्व सुन्दर, सर्व सम्पूर्ण लेख के रूप में व्योम है। ग्रह आकाश, ऋतुएं, जल, अग्नि, प्रकाश, बनस्पतियां जीव आदि समन्वित रूप से प्रकृति की एकल सृष्टि की व्यवस्था का रूप लेते हैं। मानव प्रकृति की जैव सृष्टि का सर्व विकसित अंश है जो अनेक शारीरिक, बौद्धिक तथा मानसिक क्षमताओं से सम्पन है। भारतवर्ष हमारे ग्रह का एक ऐसा अनुपम देश है जहाँ मानव ने प्रकृति संग स्नेह सत्कार के सम्बन्ध स्थापित कर प्रकृति को समझा पढ़ा तथा प्रकृति के सहयोगी स्वभाव से लाभन्वित होकर आध्यात्म तथा मानव संस्कृति का अभूतपूर्व विकास किया।

वर्तमान काल में सांस्कृतिक विकास की इस अवल परम्परा का एक प्रसंग हमें दक्षिण भारत की सहयाद्रि पर्वत श्रृंखला की दृष्यावलि में प्राप्त होता है। ब्रिटिश काल में सहयाद्रि पर्वत श्रृंखला के दक्षिणी छोर पर सावन्तवाड़ी नाम की एक छोटी सी रियास्त थी। सावन्तवाड़ी से कुछ दूरी पर एक गांव का नाम केलगांव था जिस में एक ब्राह्मण दम्पति दामोदर सातवलेकर तथा लक्ष्मीबाई निवास करते थे। सातवलेकर परिवार अपनी धर्मनिष्ठा तथा वेदमन्त्रों के शुद्ध उच्चारण के लिए विख्यात था। सातवलेकर परिवार को सावन्तवाड़ी तथा पड़ौस के कुछ गांवों में पौरोहित्य का अधिकार प्राप्त था। पं. सातवलेकर के पिता री अनन्तराव भी संग रहते थे । पं. अनन्तराव चार पैसे दक्षिणा प्राप्त करने के लिए मीलों पैदल चल जाते थे। उस युग में 4 पैसे के 2 सेर अच्छे चावल आ जाते थे।

19 सितम्बर 1867 को सातवलेकर परिवार में एक पुत्र रत्न का जन्म हुआ/बालक का नाम 'श्रीपाद' रखा गया/ परम्परानुसार पिता का नाम जोड़ कर बालक का नाम 'श्री पाद दामोदर सातवलेकर' हो गया। बालक को घर में 'श्री पाद राव' कह कर भी पुकारा जाता था ।

बालक पर सरस्वती की कृपा शैशवकाल से ही प्रकट होनी शुरु हो गई थी। बालक श्री पाद ने पांचवें वर्ष में संस्कृत के श्लोक शुद्ध उच्चारण से स्पष्ट बोलने शुरु कर दिए थे। बालक का उपनयन सस्कार पांचवें वर्ष में

सम्पन्न करा कर उसे यज्ञोपवीत धारण करा दिया गया था।

उपनयन संस्कार के पश्चात श्री पाद को प्रातः नित्यकर्म से निवृत होकर स्नान सूर्य नमस्कार, दोनों समय संध्या करने के अतिरिक्त अपने कपड़े तथा बरतन धोने पड़ते थे।

श्रीपाद को आठ वर्ष की आयु में सावन्तवाड़ी स्कूल में, उसकी योग्यतानुसार दूसरी कक्षा में प्रविष्ट किया गया। श्रीपाद हर कक्षा में प्रथम द्वितीय रहते हुए छटी कक्षा पास कर गया। सावन्तवाड़ी के हाई स्कूल में प्रतिमास फीस 8 आना लगती थी तथा अग्रेजी की पढ़ाई शुरु हो जाती थी। श्री पाद के पिता अंग्रेजी पढ़ाने के पक्ष में नहीं थे तथा प्रति मास आठ आना फीस भी उनके लिए बहुत थी। श्री पाद ने घर पर रहकर ही पढ़ना शुरु किया। वह अपने मित्रों से अंग्रेजी की पुस्तकें मांग लाता। एक पड़ोसी अंग्रेजी के अच्छे जानकार थे। वह श्रीपाद राव को अंग्रेजी पढ़ाते । श्री पाद ने एक ही वर्ष में पहली चार रीडर समाप्त कर ली। आगे उसने स्वयं अग्रेजी पढ़ना जारी रखा। घर पर उस ने कुछ ऋग वैदिक सूक्त तथा पौरोहित्य का कर्म काण्ड सीख लिया था। एक संस्कृत विद्वान चिन्तामणि केलकर से सिद्धान्त कौमुदी, मनोरमा, परिभाषेन्दु शेखर जैसे प्रौढ़ ग्रन्थों पर दक्षता प्राप्त करने के पश्चात महाभाष्य तक पढ़ने शुरु कर दिए थे।

श्रीपादराव ने यौवन में पदार्पण करते ही नई ऊर्जा का परिचय दिया उस ने एक संस्कृत व्याख्यान मण्डल तथा संस्कृत वाग विवर्धिनी सभा की स्थापना की। सभा के सदस्य सप्ताह में एक बार संस्कृत में भाषण देते तथा संस्कृत में परस्परवाद विवाद करते।

श्री पादराव के पिता वेद पाठी होने के साथ एक अच्छे चित्रकार भी थे। चित्र कला के संस्कार भी श्री पाद राव ने अपने पिता से पाए थे। 1887 में सावंतवाड़ी में कला तथा उद्योग शिक्षा का एक स्कूल खुला। श्री पाद राव ने इस स्कूल में कला का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए प्रवेष पाया। श्री पाद सावन्तवाड़ी में एक किराए के कमरे में रहने लगा। तब एक कमरे का वर्ष भर का किराया एक रुपया था। एक बार सांवतवाड़ी में संकेश्वर मठ के शंकराचार्य तथा श्री पाद के पिता श्री दामोदर राव सातव लेकर का आना हुआ। श्री पाद राव ने संकरेश्वर मठ के शंकराचार्य के समक्ष धर्म पर संस्कृत में धारा प्रवाह भाषण दिया। श्री शंकराचार्य ने श्रीपाद राव की मुक्तकंठ से प्रशंसा की पुत्र की प्रशंसा सुनकर पिता प्रफुलत हो उठे।

श्री पाद राव घर आने पर घर के कामों में हाथ बंटाने लगा था। उसे पिता कभी पौरोहित्य का धर्म निभाने के लिए भेजने लगे थे। श्री पाद राव में पौरोहित्व के काम में अरुचि थी। उसने कला के काम में रमते हुए पाया कि चित्रकला आय का अधिक सम्मान जनक कार्य है। श्री पाद राव छोटे फोटो से बड़े रेखाचित्र बनाने लगा था। एक रेखा चित्र में उसे 5 से 10 रु. प्राप्त होने लगे थे। यह अपने समयानुसार बहुत अच्छी आय थी। श्रीपाद राव अपने कला प्रशिक्षक का प्रिय छात्र था। श्रीपाद के शिक्षक प्रकृति के निपुण चितेरे थे। श्रीपाद राव ने अपने गुरु श्री मालवणकर से प्रकृति चित्रण में पूर्ण दक्षता प्राप्तकर ली थी। सांवतवाड़ी में 3 वर्ष के प्रशिक्षण के पश्चात श्री पादराव किसी प्रतिष्ठित कला केन्द्र में पहुंच कला जगत के विस्तृत क्षेत्र से परिचित तथा निपुण होने को लालयित थे। उस युग में भारत वर्ष के पश्चिमी तट के निवासियों के लिए बम्बई नगर हर सपने को साकार करने का साधन था। श्री पाद राव भी बम्बई जाने के सपने संजोने लगा। श्रीपाद राव के लिए पिता की सहमति प्राप्त करना तथा घर की आर्थिक स्थिति दो बड़ी बाधाएं थीं। श्रीपाद के पास था तो के केवल आत्मविश्वास सावंतवाड़ी के गुरुजनों का श्रीपाद के पिता से आग्रह था कि इस बालक को बम्बई जा कर आगे की शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। एक उदार सज्जन ने श्रीपाद राव के पिता से कहा कि "मैं श्रीपाद राव जैसे होनहार बालक को दस रु. प्रति मास भेजता रहूंगा।" आप इसे बम्बई भेज दीजिए। इस पर श्रीपाद राव को बम्बई भेजने के लिए सहमत हो गए।

श्रीपाद राव बेंगुली बन्दरगाह से एक रुपया स्टीमर का किराया देकर बम्बई पहुंच गए। बम्बई में श्री दामोदर राव सातवलेकर के प्रशंसक जानकर श्री बालकृष्ण जाभेकर (प्रसिद्ध उद्योगपति श्री लक्ष्मण राव किर्लोस्कर की पत्नी के भाई) रहते थे। श्री जाम्मेकर निर्धन छात्रों की सहायता किया करते थे। श्री जाम्भेकर ने श्री पाद राव को अपने घर में एक छोटे कमरे में रहने की सुविधा प्रदान कर दी।

1890 में श्री पाद बम्बई के जे. जे. स्कूल आफ़ आर्टस में प्रवेश पाया। उस समय उनकी आयु 23 वर्ष थी। स्कूल के अग्रेज़ प्रिन्सिपल का नाम जानग्रिफ़िश तथा वाइसप्रिन्सिपल का नाम ग्रीनवुड था। श्रीपाद राव स्कूल जाने से पूर्व प्रातः के नित्य कर्म से निवृत होकर पोटरेट बनाने का आर्डर लेने के लिए कुछ घरों का चक्कर लगाया करते थे। संस्कृत के ग्रन्थों के पठन तथा लेखन का काम भी नित्य करते थे।

घर से जो दस रु. आते थे उनका व्यय इस प्रकार करते थे– भोजन–6 रु., रेल भाड़ा – 1 रु., स्कूल फ़ीस 1 रु. अपरी खर्च–2 रु. उस समय मासिक 6 रु. के भोजन में दूध, दही तथा घी भी मिलता था। फोटो एनलार्ज करके 5–10 रु. बना लेते थे। श्री पाद राव को दूसरे वर्ष से छात्रवृति मिलने लग गई थी अतः दूसरे ही वर्ष से उन्होंने घर से पैसे मंगाना बन्द कर दिया था।

श्रीपाद राव के अध्ययन काल में एक बार भारत के एक महान् चित्रकार राजा रवि वर्मा बम्बई आए थे। श्रीपाद राव अपने साथियों संग राजा रविवर्मा से भेंट करने पहुंचे थे। छात्रों के विनम्र अनुरोध पर उन्होंने छात्रों को एक लघु चित्र बनाकर दिखाया था। राजा जी ने छात्रों को भारतीय संस्कृति, आरव्यान तथा प्रकृति को अपने चित्रों की विषय सामग्री बनाने की सीख दी।

श्रीपाद राव को अपने आर्ट स्कूल में अनेकों को पुरस्कार एवं पदक प्राप्त होते रहे। देश के सभी नगरों की कला प्रदर्शनियों में उनके चित्र

पुरस्कृत होते रहे। श्री पाद राव को अपने आर्ट स्कूल में दो बार मेयोमैडल से सम्मानित किया गया। यह कला जगत का अत्यन्त विशिष्ट मैडल था। स्वयं उनके प्रिन्सिपल जान ग्रिफिश ने उनकी दो पेंटिंग बहुत पसन्द की तथा उन्हें 50, 50 रु. में खरीद लिया ।

अपना अध्ययन पूरा करते ही श्री पाद को जे.जे. स्कूल आफ आर्ट में अध्यापन का प्रस्ताव किया गया। अपने प्रशिक्षण स्थान पर गुरु का पद प्राप्त कर श्री पाद को आत्म गौरव की मटिया ने अभिभूत किया। यहां शिक्षक के रूप में उन्हें प्रति मास 50 रु. प्राप्त होते थे जो अपने समय का बहुत अच्छा वेतन था। उस समय चित्रकारों की आर्थिक स्थिति में बहुत सुधार आने लगा था। आदभकद का पोर्ट रेट बनवाने की परम्परा चल पड़ी थी। एक पोर्टरेट का मूल्य हज़ार रु. तक लग जाता था। श्री पाद राव ने अपने आर्ट स्कूल से अध्यापन के काम से त्याग पत्र दे दिया। 1890 से 1900 तक बम्बई का निवास काल चित्रकला की साधना तथा कोई नया काम करने की प्रेरणा का काल भी था।

बम्बई छोड़ने के पश्चात श्री पाद ने हैदराबाद में अपना स्टूडियो खोला। हैदराबाद में श्री पाद के चित्रों की प्रशंसा पहले ही पहुच चुकी थी। हैदराबाद में जल रंगों से कुछ पोर्ट रेट तैयार किए जिन्हें एक अमरीकन ने देखते ही खरीद लिया। हैदराबाद एक बड़ी रियासत थी जिस में रईसों तथा नवाबों की बड़ी संख्या निवास करती थी। अनेक नवाबों तथा रईसों से पोटरेट बनाने के आर्डर आने लगे थे। श्री पाद राव की ख्याति निज़ाम उस्मान अली तक जा पहुंची थी नवाब उस्मान अली उन के बनाए चित्रों के प्रशंसक हो गए तथा उन्होंने राज परिवार के कई चित्र श्री पाद राव से बनवाए। श्री पाद राव का चित्रकला का व्यवसाय ज़ोरों से चल पड़ा।

चित्रकला के काम के साथ स्वाध्याय भी निर्बाध रूप से चलता रहा सार्वजनिक कार्य कर्ताओं से परिचय भी बढ़ता गया। हैदराबाद में श्री पादराव का सम्पर्क श्री केशव राव कोरप्कर (स्वर्गीय विनायक राव विद्यालंकार के पिता) के संग विशेष उपयोगी रहा। श्री कोरप्कर समर्पित आर्य समाजी थे। केशव राव कोरप्कर का संग श्री पाद राव को आर्य समाज के सम्पर्क में ले आया। उन दिनों आर्य समाज देश की सर्व प्रमुख समाज सुधारक संस्था थी। आर्य समाज के कार्यकर्ताओं में देश, धर्म, जाति के उद्धार की अनूठी लगन थी। महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना वैदिक धर्म के पुनरुद्धार तथा राष्ट्र के पुनर्निर्माण के लिए की थी। श्री पाद राव को वैदिक धर्म सम्बन्धी ग्रन्थ सहज ही प्राप्त हो गए थे। वह इन ग्रन्थों का परायण कर ऋषि दयानन्द के रंग में रंग गए थे तथा आर्य समाज की सदस्यता भी ग्रहण कर ली थी। आर्य समाज की सभाओं में आर्य संस्कृति पर व्याख्यान भी देने लगे थे। श्री पाद राव संस्कृत के विद्वान तो थे ही, आर्य ग्रन्थों के अध्ययन से वाणी में और भी ओज आ गया था। आर्य समाज में भी उनका मान बहुत बढ़ गया था। आर्य समाज के सभी लोग उन्हें "पंडित सातवलेकर जी" तथा पंडित जी कहकर बुलाने लगे थे। पंडित सातवलेकर ने ऋषि दयानन्द कृत "सत्यार्थ प्रकाश" तथा "ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका" का मराठी में अनुवाद कर महाराजा बड़ौदा श्री सयाजीराव गायकवाड़ को भेंट किया था। महाराजा ने उन्हें 500 रु. पारितोषिक प्रदान किए थे।

उन दिनों हैदराबाद देश भक्त क्रान्तिकारियों की कर्म स्थली बना हुआ था। वेदों के अध्ययन से श्री पाद राव के मन में देश के प्रति समर्पण की भावना ने स्थान पा लिया था। देश के प्रति समर्पित होकर कुछ करना श्री पाद के लिए वैदिक धर्म का पालन करने के समान था। श्री पाद ने अपने सहयोगी प्रशंसको के सहयोग से हैदराबाद में "विवेक वर्धिनी" नाम की संस्था की स्थापना की जिस के अन्तर्गत मुख्य रूप से तीन काम चलते थे। (1) व्यायाम शाला (2) बालक बालिकाओं का स्कूल तथा (3) व्याख्यान मण्डल व्यायाम शाला में प्रतिदिन 300-400 तक नवयुवक व्यायाम करने आते थे। यह नव युवक विभिन्न राज्यों के होते थे। व्यायाम शाला में नवयुवक क्रान्तिकारी विचारों की दीक्षा भी पाते थे। व्यायामशाला क्रान्तिकारी नवयुवकों की संगम स्थली बन गई थी।

– ब्रह्मदेव भाटिया
पश्चिम विहार दिल्ली, मो. 8750533620

खुदीराम बोस का उद्‌गार –

करता क्यों बगावत मैं,
यदि फाँसी का डर होता ।
चढ़ाता भेंट माता को,
अगर एक और सिर होता ।।

नवलेखकों के प्रेरणा स्थान, डॉ. भवानीलाल भारतीय

कोई भी धर्म, समाज अथवा संस्था अगर अपने कार्य एवं पहचान को इतिहास के पृष्ठों पर अंकित कर रखती है तो उसके अस्तित्व को कोई मिटा नहीं सकता । मौखिक एवं संवाद रूप में किया गया कार्य समय को प्रभावित तो कर सकता है लेकिन इतिहास उसे अपने पृष्ठों में उतना स्थान नहीं देता जितना उसे देना चाहिए। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था "मेरे व्याख्यानों को लोग सुनते हैं पर बाद में भूल जाते हैं। मैं इससे निराश हूँ।" यह भूल महर्षि दयानन्द ने नहीं की। उन्होंने सिर्फ व्याख्यानों, शास्त्रार्थों अथवा संवाद को ही प्रचार का माध्यम नहीं बनाया बल्कि अपने मन्तव्यों एवं सिद्धान्तों को काल के पृष्ठों पर अंकित कर उसे शाश्वत बना दिया। यदि स्वामी जी ने कालजयी ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" और ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका आदि 32 ग्रन्थों का निर्माण नहीं किया होता तो आज सम्पूर्ण विश्व उनके विचारों से अनभिज्ञ रह जाता। इतिहास काल और विचारों का अनुगामी होता है, और समाज उसका अनुकरण करता है। स्वामी दयानन्द और उनके परवर्ति विद्वानों ने आर्य समाज के साहित्य निर्माण में बहुत बडा योगदान दिया है।

डॉ. भवानीलाल भारतीय जी भी आर्य लेखकों की उस अग्रिम पंक्ति में खडे हैं जिनमें पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द पं. गुरुदत्त पं. चमूपति, स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी वेदानन्द पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय, स्वामी अभेदानन्द आदि दिग्गज लेखक हैं।

आपसे पूर्व आर्य लेखकों की साहित्य निर्माण की शैली वर्णनात्मक, खण्डन मण्डनात्मक एवं प्रमाण दर्शक रही है। सर्व प्रथम आपने आर्य साहित्य में शोध एवं तुलनात्मक शैली का प्रारम्भ किया। "स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द", "स्वामी दयानन्द और राजा मोहनराय", "पाश्चात्यों की दृष्टि में दयानन्द", "लेखक कोष", "आर्य विद्वानों का परिचय संग्रह", "आर्य समाज की संस्कृत साहित्य को देन", "महर्षिदयानन्द का खोज पूर्ण जीवन" और अन्य पचासो विषयों पर आपने साहित्य निर्मिती की है। आप एक प्रगल्भ एवं उच्च कोटि के अध्यवसायी थे। उनके जानें से आर्यजगत् के साहित्य निर्माण की अकथनीय क्षति हुई है।

आपके जीवन में विद्वत्ता और विनम्रता का सुन्दर समन्वय था। किसी पर क्रोध करते या आवेश में आकर बात करते हुए उन्हें किसी ने नहीं देखा। उनका मिलन सार व्यक्तित्व सभी में आदर भाव उत्यन्न करने वाला था।

लेखन के क्षेत्र में आर्य समाजी ही नहीं, अपितु गैर आर्यसमाजी लेखक भी उनसे प्रेरणा लेते रहे हैं। आपके मार्गदर्शन में अनेक शोधार्थी आर्य समाज एवं वैदिक सिद्धान्तों के लेखन की और अग्रसर हुए हैं। मैं भले ही गुरुकुल महा. ज्वालापुर मं शिक्षित हुआ हूँ, लेकिन सन् 1996 से आपके साहित्य सृजन को देखकर इस कार्य में अधिक प्रवृत्त हुआ हूँ।

आप दो बार श्रावणी पर्व पर लातूर आर्य थे तब आपको अपने घर मैंने आमन्त्रित किया था। मुझे याद है मैंने श्री भारतीय जी को स्वामी जी के छत्तीस ग्रन्थों से उनके सिद्धान्तों को संग्रहित करने के कार्य को उन्हें दिखाया था, वे बड़े प्रभावित हुए और यह कहा कि यह कार्य अब तक किसी ने नहीं किया है, यह सुनकर मुझे और स्फूर्ति प्राप्त हुई आज वह ग्रन्थ "दयानन्द शिखर सिद्धान्त" नाम से पूर्णता की ओर है। उन्होंने एक बार कहा था कि स्वामी दयानन्द के बारे में महापुरुषों के विचार सभी ने लिखे है आप (चंद्रशेखर) मुस्लिम विद्वानों का स्वामी जी के प्रति क्या मत है यह लिखो। मैंने वह भी कार्य पूर्ण किया है। "मुस्लिम विद्वानों की घर वापसी" इस पुस्तक के लिए भी डॉ. भारतीयजीने 2-3 मुस्लिम विद्वानों का परिचय मुझे भेजा जो प्रकाशित है। आप "शिवाजी द ग्रेट" यह डॉ. बालकृष्ण शर्मा (शाहू महाराज कोल्हापूर युनि. के संस्थापक सदस्य एवं सहयोगी) लिखित पुस्तक का अनुवाद करना चाहते थे पर वह कार्य रह गया। जब भी मैं कोई जानकारी उनसे प्राप्त करना चाहता तो वे फोन पर अथवा पत्र से मुझे करा देते थे। मेरी मराठी में लिखित "वेदामध्ये पर्यावरण विज्ञान" यह पुस्तक उनके ही कर कमलों द्वारा विमोचित हुई है। "स्वामी दयानन्द संक्षिप्त जीवन चरित्र" आणि सुविचार "इसके अब तक पाँच संस्करण निकल चुके हैं इसके लिए भी आपका हमेशा दिशा निर्देश रहा है। जब एक इतना बड़ा विद्वान और लेखक मुझ जैसे सामान्य लेखक का मार्गदर्शन करता है तो उसके मन में अन्यों के प्रति कितनी सद्‌भावना होगी, यह सहज गम्य है।" इन्हीं उच्च गुणों को लक्ष्य कर अभी उनके निधन से 15 दिन पूर्व मैंने "मैं दयानन्द बोल रहा हूँ" यह पुस्तक उन्हें समर्पित की थी। ऐसे उच्च एवं एक सच्चे गवेषक को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ।

–डॉ. चंद्रशेखर लोखण्डे,
सीताराम नगर, लातूर
अध्यक्ष, संस्कृति रक्षक मंच, मो. 9922255597

पं. श्री रामप्रसाद बिस्मिल

श्री रामप्रसाद बिस्मिल बड़े ही होनहार नौजवान थे। गजब के शायर थे। देखने में भी बहुत सुन्दर थे। योग्य बहुत थे। जानने वाले कहते हैं कि यदि किसी और जगह या किसी और देश या किसी और समय पैदा हुए होते तो सेनाध्यक्ष बनते। आपको पूरे षड़यन्त्र का नेता माना गया है। चाहे बहुत पढ़े हुए नहीं थे, लेकिन फिर भी पण्डित जगतनारायण जैसे सरकारी वकील की सुध–बुध भुला देते थे। चीफ कोर्ट में अपनी अपील खुद ही लिखी थी जिसमें कि जजों को कहना पड़ा कि इसे लिखने में जरुर ही किसी बुद्धिमान व योग्य व्यक्ति का हाथ है।

19 तारीख की शाम को आपको फांसी दी गयी। 18 की शाम को जब आपको दूध दिया गया, तो आपने यह कहकर इन्कार कर दिया कि अब तो माँ का दूध ही पीऊँगा। 18 को आपकी मुलाकात हुई। माँ को मिलते समय आपकी आँखों से अश्रु बह चले। माँ बहुत हिम्मत वाली देवी थी। आपसे कहने लगी हरिश्चन्द्र, दधीचि आदि बुजुर्गो की तरह वीरता, धर्म व देश के लिए जान दे, चिन्ता करने और पछताने की जरुरत नहीं। आप हंस पड़े। कहा माँ ! मुझे क्या चिन्ता और क्या पछतावा मैंने कोई पाप नहीं किया। मैं मौत से नहीं डरता। लेकिन माँ। आग के पास रखा घी पिघल जाता है। तेरा मेरा सम्बन्ध ही कुछ ऐसा है कि पास होते ही आँखों में अश्रु उमड़ पड़े। नहीं तो मैं बहुत खुश हूँ। फाँसी पर ले जाते समय आपने बड़े जोर से कहा– 'वन्दे मातरम्' 'भारत माता की जय' और शान्ति से चलते हुए कहा –

मालिक तेरी रजा रहे और तू रहे
बाकी न मैं रहूँ, न मेरी आरजू रहे।
जब तक कि तन में जान रगों में लहू रहे,
तेरा ही जिक्र यार तेरी जुस्तजू रहे।

फांसी के तख्ते पर खड़े होकर आपने कहा – (मैं ब्रिटिश साम्राज्य का पतन चाहता हूँ।) फिर यह शेर पढ़ा–

अब न अगले वलवले हैं और
न अरमानों की भीड़।
एक मिट जाने की हसरत,
अब दिले बिस्मल में है।।

फिर ईश्वर के आगे प्रार्थना की और फिर मन्त्र पढ़ना शुरू किया। रस्सी खींची गयी। रामप्रसाद जी फांसी पर लटक गये। आज वह वीर इस संसार में नहीं है। उसे अंग्रेजी सरकार ने अपना खौफनाक दुश्मन समझा। आम ख्याल यह है कि उसका कसूर यही था कि वह इस गुलाम देश में जन्म लेकर भी एक बड़ा भारी बोझ बन गया था और लड़ाई की विद्या से खूब परिचित था। आपको मैनपुरी षड़यन्त्र में नेता श्री गेंदालाल दीक्षित जैसे शूरवीर ने विशेष तौर पर शिक्षा देकर तैयार किया था। मैनपुरी के मुकदमे के समय आप भागकर नेपाल चले गये थे। अब वही शिक्षा आपकी मृत्यु का कारण हो गयी। 7 बजे आपकी लाश मिली और बड़ा भारी जुलूस निकला। स्वदेश–प्रेम में आपकी माता ने कहा –

मैं अपने पुत्र की इस मृत्यु पर प्रसन्न हूँ, दुःखी नहीं।

मैं श्री रामचन्द्र जैसा ही पुत्र चाहती थी। बोलो श्री रामचन्द्र की जय।

इत्र फुलेल और फूलों की वर्षा के बीच उनकी लाश का जुलूस जा रहा था। दुकानदारों ने उनके ऊपर से पैसे फेंके। 11 बजे आपकी लाश श्मशान भूमि में पहुँची और अन्तिम क्रिया समाप्त हुई।

आपके पत्र का आखिरी, हिस्सा आपकी प्रस्तुत है –

मैं खूब सुखी हूँ। 16 तारीख को प्रातः जो होना है उसके लिए तैयार हूँ। परमात्मा काफी शक्ति देंगे। मेरा विश्वास है कि मैं लोगों की सेवा के लिए फिर जल्द ही जन्म लूँगा। सभी से मेरा नमस्कार कहें। दया कर इतना काम और भी करना कि मेरी ओर से पण्डित जगतनारायण (सरकारी वकील), जिसने इन्हें फांसी लगवाने के लिए बहुत जोर लगाया था।) को अन्तिम नमस्कार कह देना। उन्हें हमारे खून से लथ–पथ रुपयों से चैन की नींद आये। बुढ़ापे में ईश्वर उन्हें सद्बुद्धि दे।

रामप्रसाद जी की सारी हसरतें दिल ही दिल में रह गयी। फांसी से दो दिन पहले से सी.आई.डी. के मि. हैमिल्टन आप लोगों की मिन्नतें करते रहे कि आप मौखिक रूप से सब बातें बता दो, आपको पाँच हजार रूपये नकद दे दिया जायेगा और सरकारी खर्च पर विलायत भेजकर बैरिस्टर की पढ़ाई करवाई जायेगी। लेकिन आप कब इन बातों की परवाह करते थे। आप हुकुमतों को ठुकराने वाले व कभी कभार जन्म लेने वाले वीरों में से थे। मुकदमें के दिनों में आपसे जज ने पूछा था, आपके पास क्या डिग्री है ? तो आपने हँस कर जवाब दिया, सम्राट् बनने वालों को डिग्री की कोई जरुरत नहीं होती। क्लाइव के पास भी कोई डिग्री नहीं थी। आज हमारे बीच नहीं है। आह"।

– आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक

त्याग का महत्व

त्याग मनुष्य के जीवन में सुख का मूल है। अतृप्त इच्छायें कामनायें दंश बनकर दुःख देती हैं और सुरसा के मुख की भांति बढ़ती कामनायें और अधिक पाने की इच्छा भौतिक सुखों के संग्रह की आदत अंत में जीवन में दुःखों का कारण बनती हैं। मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा धन संतोष धन है जिसे पा लेने के बाद व्यक्ति तृप्त हो जाता है। इसीलिए वेद भगवान ने तेन त्यक्तेन भुंजीथा का आदेश देकर मनुष्यों को त्यागपूर्वक भोग करने का निर्देश दिया है। ईश्वर के उपकारों की बरसात हम सब मनुष्यों पर बड़ी सरलता और सहजता से हो रही है। यह हम मनुष्यों की पात्रता पर निर्भर करता है कि हम पुरुषार्थ से अर्जित तथा ईश्वर प्रदत्त ज्ञान धन आदि में से कितना दे पाते हैं।

मनुष्य के जीवन की असली खुशी इस बात पर निर्भर करती है कि हम क्या दे सकते हैं। त्याग की खुशी का सच्चा आनंद हम जीवन में रक्तदान करते समय बड़ी आसानी से महसूस कर सकते हैं। स्वस्थ मनुष्य जब किसी घायल मरणासन्न रोगी को रक्त देकर जीवन दान देते हैं तो उस समय इस त्याग देने की खुशी चरम पर होती है। इसके महत्व को हम अपने लिए जीवन रक्षा के समय रक्त की आवश्यकता पड़ने पर महसूस कर सकते हैं। एक लौकिक उदाहरण से त्याग के महत्व का हम और अच्छी प्रकार से समझ सकते है। एक सेठ जी कथा सुनने आते और चुपचाप पीछे कर बड़े ध्यान से कथा सुनते। एक दिन जब वक्ता ने दान का महत्व समझाया तो उसके प्रभाव से सेठ जी ने उसी एक बड़ी धनराशि दान में देने की घोषणा कर दी। यह सुनकर संस्था के प्रधान ने तुरंत सेठ जी को मंच पर बैठा कर उनका स्वागत किया। इस पर सेठ जी ने टिप्पणी की "यह सम्मान शायद मेरे धन का है" तो तुरंत विद्वान ने सेठ जी को समझाया "सेठ जी यह सम्मान आपकी त्याग भावना का है। यह धन तो पहले भी आपकी तिजोरी में पड़ा था लेकिन आपको सम्मान नहीं दिलवा पाया परन्तु जैसे ही आपने इसका त्याग दान भावना से किया इस त्याग भावना ने आपको समाज में सम्मान दिलवा दिया।"

वेसे भी यह एक निश्चित सत्य है कि त्याग से देने वाले के पास वह वस्तु घटती नहीं अपितु बढ़ जाती है। इसे समझने के लिए हम विद्या दान का उदाहरण ले सकते हैं। ज्ञान बांटने से बढ़ता है। ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में त्याग के पुण्य के लाभ से मिलने वाली अच्छी नियति निश्चित रूप से त्यागी के जीवन को सुखी करती है। खुशी का सबसे बड़ा रहस्य त्याग है। संसार में सबसे बड़ा अधिकार सेवा और त्याग से प्राप्त होता है। त्याग के बिना ईश्वरीय प्रेरणा और प्रेरणा और प्रार्थना नही मिल पाती। मनुष्य का जीवन देने के लिये हैं लेने के लिये नहीं। ऊँचाई पर पहुंचकर दूसरों की भलाई के लिए बादल बन कर बरसने में ही सच्चा सुख है वरना बड़ा हुआ तो क्या जैसे पेड़ खजूर, पंछी को छाया नहीं फल लागे अति दूर। नदी अपना नीर स्वयं नहीं पीती, वृक्ष अपना फल खुद नहीं खाते ठीक उसी प्रकार इनसे प्रेरणा लेकर हम मनुष्यों को भी अपने जीवन में पुरुषार्थ से अर्जित तथा ईश्वर प्रदत्त ज्ञान धन ऐश्वर्य को त्याग पूर्वक बांट कर सच्चे सुख को प्राप्त करना चाहिए। वैसे भी वेद भगवान ने "केवलाघो भवति केवलादि" कहकर स्पष्ट रूप से चेतावनी दी है कि अकेला खाने वाला पाप खाता है। इसलिए हमें जीवन में सदा बांटकर सबके साथ मिलकर त्यागपूर्वक भोग करते हुए सुख पूर्वक रहना चाहिए।

–नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'
सैक्टर–20 पंचकूला मो. 9467608686

आर्य जगत की हल–चल

1 आर्य समाज ग्रुप हाऊसिंग विकासपुरी नई दिल्ली द्वारा दस दिवसीय यज्ञ एवं वेद कथा का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा एवं वेदकथा वाचन आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी द्वारा किया गया। जिसमें आचार्य जी ने कहा कि "दुनिया के चार स्थान कभी नहीं भरते, समुद्र, श्मशान, तृष्णा का गड्ढा और मनुष्य का मन" इस अवसर पर आचार्य चन्द्रशेखर जी, आचार्य इन्द्रवेद जी और आचार्य योगेन्द्र जी के भी सारगर्भित प्रवचन हुए।

2 आर्य समाज मन्दिर तिलक नगर, नई दिल्ली एवं कालरा परिवार द्वारा नव दिवसीय यज्ञ एवं वेदकथा का आयोजन किया गया। जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा दमोदर शास्त्री जी, वेद प्रवचन के कर्त्ता आर्य जगत् के युवा विद्वान् आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी ने अपने प्रवचन में कहा "उपहास, उपेक्षा, तिरस्कार और दमन का तिरस्कार कर, सम्मान आपके कदम चूमेगा" इस अवसर पर आचार्य विद्यादेव जी के भी सारगर्भित प्रवचन हुए, ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

दीपावली

भारत है त्योहारों का देश, त्योहारों का त्योहार दिवाली है
आतिश बाज़ी में घूमती दिवाली है, जुगनू में चमकती दिवाली है
तारों की टमटमाती दिवाली है, बिजली की लड़ियों में दिवाली है
गंगा में तैरते दियों में दिवाली है, करवा चौथ में झलकती दिवाली है
पर दिये जलाने में जो दिवाली है, वही असली दिवाली है।
राम के अयोध्या वापस आने पर होती दिवाली है,
गुरु हरगोबिन्द के ग्वालियर किले से रिहाई की दिवाली है,
ऋषि दयानन्द के अजमेर में निर्वाण की दिवाली है,
गुरु नानक के जन्म दिन पर बधाई की दिवाली है,
गणतंत्र दिवस पर सरकारी भवनों पर छलकती दिवाली है।
गुरुग्राम की ऊँची इमारतों में रात्री को दिखती दिवाली है,
पालम हवाई अड्डे की पट्टी की पट्टी में सायं से दिखती दिवाली है,
ट्रेफीक जाम के क्रोध में भी अन्धेरे में दिखती दिवाली है,
सिर पर दिया रख नृत्य में दिखती दिवाली है,
हैप्पी ब्रथडे की मोमबत्ती में थोड़ी सी दिखती दिवाली है,
बच्चे की मुसकराहट में भी दिखती दिवाली है।
सजने सजाने के बिना दिवाली नहीं हो सकती,
आकाश से गिरती बिजली में दिवाली नहीं हो सकती,
फैन्सी ड्रेस पहने बिना दिवाली नहीं हो सकती,
मित्रों सम्बंधियों से मिले बिना दिवाली नहीं हो सकती,
खिलोनों और मिठाई के बिना दिवाली नहीं हो सकती।
घर में लक्ष्मी आने की इच्छा में दिवाली है,
तन की सफाई मन की सफाई का नाम दिवाली है,
हीरे मोती की चमक, सोने चांदी की दकम दिवाली है,
हरिमंदिर के सरोवर में क्या चमकती दिवाली है,
दिवाली मेले में दिवाली है, आज हर जगह दिवाली है।
दिवाली पर चेहरे में नूर आना चाहिए,
आंखों में स्नेह, दिल में सरुर आना चाहिए ।

–हरबंस लाल कोहली

शोक समाचार

आर्य समाज व गुरुकुलों के परम सहयोगी यज्ञ योग में अत्यन्त श्रद्धावान आर्य नेतृ माता सरोज अग्निहोत्री (धर्म पत्नी श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री) का स्वर्गवास 24.11.2018 हो गया है। उनकी श्रद्धांजलि सभा आर्य समाज हनुमान रोड़, नई दिल्ली में दिनांक 27.11.2018 को सम्पन्न हुई। इस श्रद्धांजलि सभा में प्रमुख रुप से स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी धर्ममुनि जी, आचार्य देवराज जी, डॉ. वागीश जी, आ. प्रेमपाल शास्त्री जी, डॉ. महेश विद्यालंकार जी, श्री सत्यपाल पथिक जी, योगेश मुंजाल जी, आनंद चोहान जी, श्री धर्मपाल जी, श्री विनय आर्य जी, श्री अनिल आर्य जी, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री आदि प्रमुख विद्वानों ने अपने–अपने श्रद्धा सुमन समर्पित किए।

–सुनीता बुद्धिराजा

शुद्धि सभा के पूर्व प्रधान, हमारे पथ प्रदर्शक

स्व. द्वारकानाथ जी सहगल पुण्य तिथि पर शत्-शत् नमन

वैदिक धर्म के लिए पूर्णतया समर्पित, महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, भारतीय संस्कृति सभ्यता के पोषक स्वनामधन्य स्व. श्री द्वारकानाथ जी सहगल के निर्वाण दिवस 5 दिसम्बर को भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा तथा आर्य समाज राजेन्द्र नगर उनकी पावन स्मृति को सश्रद्ध नमन करती है।

– श्रीमती आदर्श सहगल

जन्म ७-१-१९११ - निर्वाण ५-१२-१९८८

माह अक्टूबर+नवम्बर 2018 के आर्थिक सहयोगी

अखिल भारतीय आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा संघ, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	छः माह की सहायता	7200/–
पुष्पावती पुरी दयानन्द आदर्श विद्यालय, आर्य समाज माडल बस्ती, शीदीपुरा, नई दिल्ली	वार्षिक सहायता	6000/–
आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली	मासिक	800/–
आर्य समाज इन्द्रा नगर, बगलौर	मासिक	700/–
श्री रामनाथ सहगल जी, संरक्षक–शुद्धि सभा दिल्ली		500/–
श्री चतर सिंह नागर जी, महामंत्री, शुद्धि सभा	मासिक	500/–
आर्य समाज कोटला मुबारक पुर, नई दिल्ली		500/–
श्री शैलेन्द्र त्रिपाठी जी, गली नं. 8, शास्त्री पार्क, दिल्ली		500/–
श्री रमेश वेदी श्रीमती प्रमिला देवी जी, आर्य समाज देव नगर, नई दिल्ली		500/–
श्री अमीर सिंह जी, हैवस टैक्स सोसाइटी, सै.–43, गुड़गांव		500/–
श्री शिवकुमार मदान जी, ट्रस्टी, जनकपुरी, नई दिल्ली	मासिक	250/–
श्रीमती सुदर्शन फिंगर जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली		200/–
सुवीरा एवं वन्दना जी, मयूर विहार फेज–1, दिल्ली		200/–
श्रीमती सुशीला चावला जी, पीतमपुरा, दिल्ली	मासिक	100/–
श्री ओ.पी. राघव जी, दिलशाद गार्डन, दिल्ली		100/–

श्रीमती संतोष चावला जी (आर्य महिला आश्रम), द्वारा एकत्रित त्रैमासिक दान

श्रीमती वासन्ती चौधरी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	1500/–
श्रीमती राज श्री गुप्ता जी, डी.डी.ए.एम.आई.जी. फ्लैट, प्रसाद नगर, नई दिल्ली	500/–
श्रीमती संतोष बहल जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	200/–
श्रीमती मृदुला रस्तोगी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	200/–
श्रीमती कैलाश कपूर जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	300/–
श्रीमती शकुन्तला दीवान जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	200/–
श्रीमती सुरेश तलवार जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	200/–
श्री दयानन्द शर्मा जी, नजफगढ़ रोड़, नई दिल्ली	200/–
श्रीमती कृष्णा खेड़ा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	100/–
श्रीमती कैथरीन जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	100/–
श्रीमती इन्दू बिज जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	100/–
श्रीमती निर्मल शर्मा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	100/–
श्रीमती भगवती देवी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	100/–
श्रीमती संतोष ढिगल जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	100/–
श्रीमती प्यारी देवी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	70/–
श्रीमती भगवती देवी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	50/–

शुद्धि समाचार के नये आजीवन सदस्य

श्री रोहताश आर्य जी, (चित्रकार) प्रेमनगर, नजफगढ़, नई दिल्ली	500/–
दिव्य गौशाला द्वारा आर्य समाज विशाखा एनकलेव, दिल्ली	500/–
श्री जग्याराम नाथ जी, पो. बोरसोला, जिला, सोनीतपुर, आसाम	500/–
आर्य समाज जहांगीर पुरी, नई दिल्ली	500/–
महर्षि दयानन्द शिक्षा सदन, आर्य समाज तिलहर शाहजहांपुर	500/–
श्री विवेक बद्रीप्रसाद आर्य, सम्माजी नगर, जालना महाराष्ट्र	500/–
श्री मनीष कुमार साहू (बाबा जी) ओलन्द गंज, जौनपुर, उ.प्र.	500/–
श्री राजकुमार आर्य, पो. छत्त, जि. विलासपुर हि.प्र.	500/–
श्री आ. ज्ञान प्रकाश वैदिक, सहतवार, जि. बलिया, उ.प्र.	500/–
श्री अशोक गौतक जी, अरवन स्टेट, जीन्द, हरियाणा	500/–
श्री विवेक अग्रवाल जी, सैक्टर–8 रोहिणी, दिल्ली	500/–
श्री महावीर सिंह भाटी, ग्राम+पो. तालरबा, जि. जोधपुर राज.	500/–
श्री सदानन्द मुनि जी, शास्त्री जिला सुनसरी, नेपाल	500/–
वैद्य विज्ञान मुनि जी वानप्रस्थी, आर्य समाज परली, जिला बीड़ महा.	500/–

सूचना

आर्य समाज मंदिर गुरुहरकिशन मार्ग रेलवे रोड़ राजा पार्क का वार्षिक उत्सव व यजुर्वेद शतकम् महायज्ञ संपन्न हुआ। जिसके ब्रह्मा व कथाकार आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी एवं आचार्य अखिलेश्वर जी के मार्मिक प्रवचन हुए। आर्य समाज के पुरोहित श्यामपाल आर्य के पुत्र का नामकरण कर आशीर्वाद प्रदान किया। प्रधान श्री सोमनाथपुरी जी ने सभी अतिथियों का धन्यवाद किया।

–मैथिली शरण शर्मा

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-12-2018 (pages 8) Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/2018-20
Posting Date : 2-3 Every Month

सेवा में,

शुद्धि समाचार

दिसम्बर – 2018

भर्तृहरि वचन

1. धन की तीन गतियां होती हैं। दान, भोग और नाश। जो मनुष्य न धन का दान करता है और न भोग करता है, उस का धन नाश को प्राप्त हो जाता है।

2. दुर्जन व्यक्ति चाहे कितना ही विद्वान हो उसे उसी प्रकार त्याग देना चाहिये जैसे मणिधारी विषधर को त्याग दिया जाता है।

3. व्यक्ति की तृष्णा कभी नहीं मरती। तृष्णा को त्याग कर संतोष प्राप्त करें। संतोष के अतिरिक्त सुख–शान्ति का दूसरा कोई मार्ग नहीं है।

4. भोगों को हमने नहीं भोगा, बल्कि भोगों ने ही हमें भोग लिया। तृष्णा बूढ़ी नहीं हुई, हम ही बूढ़े हो गये।

5. आशा एक नदी है, इसमें इच्छायें रूपी जल भरा है और तृष्णा रूपी लहरें उठा करती हैं। आशा में ही व्यक्ति जीवन भर फंसा रहता है।

6. दूसरों का चिन्तन करने की बजाय मनुष्य को आत्मचिन्तन में लगना चाहिये। आत्मचिन्तन से विवेक की प्राप्ति होगी।

7. मोह भय उत्पन करता है। मोह से मुक्त वही हो सकता है जिसने वैराग्य धारण कर लिया हो।

8. जब तक मनुष्य को आत्मज्ञान प्राप्त नहीं होता, तब तक ही वह सांसारिक भोगों में लीन रहता है। ब्रह्मज्ञान होता है तो वह सांसारिक सुखों से मुंह मोड़ लेता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के प्रयास करने चाहियें।

9. संसार में आकर व्यक्ति कुछ करे या न करे उसे मोक्ष प्राप्ति का प्रयास अवश्य करना चाहिए।

10. मन की गति विचित्र है, वह पल में कहीं होता है और पल में कहीं। किन्तु इतना मूर्ख है कि आत्मा में बसे परमात्मा का स्मरण नहीं करता जिसकी अनुकम्पा से सहज ही मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।

11. सुख तो क्षण भंगुर हैं। परमात्मा के सिवाय कुछ भी नित्य नहीं है। अगर मनुष्य को संसार रूपी भवसागर से पार उतरना है तो उसे परमात्मा के ध्यान में लीन हो जाना चाहिये।

12. नाना प्रकार के सांसारिक भोग नाशवान हैं, इन्हीं के कारण आवागमन का चक्र चलता रहता है। आशा, कामना आदि का त्याग कर मन को परमेश्वर में लगाओ।

–जे.आर. कपूर

शुद्धिकरण कीजिए

धर्म को सत्कर्म से उपकार चाहिए, मानवता को विश्व का श्रृंगार चाहिए।
भटकते राहगीर को शरण दीजिए, दलदल में जो फंसे उनका शुद्धिकरण कीजिए।।
सिद्धान्त सत्कर्म की राहो पर धूल जब चली, घायल हुई तब विश्वास की हर कली।
धर्म जब खिलौनें जागीर बन गये, छोटे घाव भी गहरी पीर बन गये।।
समाज के अंग–समाज से बदलने लगे, बिजलियों के दर्द से बादल फटने लगे।
पंखुड़ियाँ मसलने के लिए न चरण दीजिए, दल दल में जो फंसे उनका शुद्धिकरण कीजिए।।
डाल से फूल टूटे तो टूटते गये, अपनो से जो रुठे, वो रुठते गये।
घृणा, द्वेष, अन्धकार, के अन्धड़ उड़े, अविश्वास के तब यहां बवंडर उड़।।
हम सोये रह गये घर जलता रहा, युगों तक ये क्रम चलता रहा।
वक्त विश्राम का नहीं, विचार मंथन कीजिए, दल दल में जो फंसे उनका शुद्धिकरण कीजिए।।
घर की दीवारें सभी चरमराने लगीं, ऊँची मंजिले भी डगमगाने लगीं।
देखी दुर्दशा तो, रोया किसी का मन, अब न लूटने दूँगा, अपना चमन।।
राह बना दी, उन्होंने अपने सत्कर्म से, बिछुड़े हुऐ लौटे, उस अपने धर्म में।
भंवर मे जिनकी नाव, आलम्बन दीजिए, दल दल में जो फंसे उनका शुद्धिकरण कीजिए।।
ले पताका ज्ञान की महापुरुष बढ़े, अपने धर्म मुकुट में है अमूल्य रतन जड़े।
काँच के टूकड़ों पर न मति भ्रमित कीजिए, आर्य–धर्म मार्ग पर जीवन समर्पित कीजिए।।

–आशु कवि विजय गुप्त, मदनगीर, अम्बेडकर नगर, दिल्ली

कौन था वह?

- जिसे डॉ॰ अंबेडकर ने दलितों का सबसे बड़ा मसीहा कहा–
- जिसने मैकाले की शिक्षा नीति का करारा जवाब दिया–
- जिसे महात्मा गांधी अपना बड़ा भाई कहते थे–
- जिसने चांदनी चौक में संगीनों के सामने सीना खोलकर अंग्रेजी पुलिस को गोली चलाने के लिए ललकारा था—
- जिसे जामा मस्जिद में मिम्बर और स्वर्ण मंदिर के अकाल तख्त साहब से प्रवचन करने का गौरव प्राप्त हुआ—
- जिसने भारत को लोक अदालतों का विचार दिया—
- जिसने भारतीय स्वामित्व में पहला राष्ट्रीय स्तर का दैनिक अखबार प्रकाशित किया—
- जिसने अमृतसर में जलियावाला बाग काण्ड के बाद कांग्रेस का अधिवेशन करवाने की हिम्मत दिखाई—

वह था

महान् बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द

- 20 वीं सदी का चमत्कारी एवं प्रेरक व्यक्तित्व
- देश और धर्म पर बलिदानी
- निर्भीक संपादक
- गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का संस्थापक
- सांप्रदायिक सद्भाव का प्रतीक
- अपने समय का सर्वाधिक लोकप्रिय नेता, दिल्ली का बेताज बादशाह
- शुद्धि अभियान का प्रणेता
- महर्षि दयानन्द का उत्तराधिकारी
- लोक कल्याण के लिए अपनी सारी सम्पत्ति दान कर देने वाला सर्वत्यागी संन्यासी सत्य से परे कोई धर्म नहीं।

धर्म की नींव ही सत्य है।
उच्च से उच्च मस्तिष्क संसार के नाश का कारण है,
यदि उसके साथ पवित्र आत्मा सम्मिलित नहीं है।
जो स्वयं भोगी है वे दूसरे को त्याग कैसे सिखलायेंगे?

इसी जन्म भूमि के लिए कष्ट सहना, इसी की सेवा में सारा पुरुषार्थ लगाना और इसी पर सर्वस्व न्यौछावर करना एक–एक भारतवासी अपना धर्म समझ लें।

मैं आप सभी देशवासियों से याचना करूँगा कि अपने हृदयों को मातृभूमि के प्रेम जल से शुद्ध करके प्रतिज्ञा करो कि आज से ये करोड़ों दलित हमारे लिए अछूत नहीं हैं, बल्कि हमारे ही भाई बहन हैं।

मैं स्वयं कमजोर, रोगी और वृद्ध होते हुए भी सारे देश में घूमने जाऊंगा, दलित भाइयों का संगठन करूँगा।

जिस देश और जाति में शिक्षक स्वयं चरित्रवान न हों, उसकी दशा कभी सुधर नहीं सकती।

तुम्हारा ज्ञान निष्फल है, यदि तुम उस पर आचरण नहीं करते।

पंडित लेखराम जी का उद्गार –

धर्म के मग में अधर्मी से, कभी डरना नहीं ।
चेत कर चलना कुमारग में, कदम धरना नहीं।।
भद्र भावों में भयानक, भावना भरना नहीं ।
बोद्ध बर्धक लेख लिखने में, कमी करना नहीं।।

मुद्रक, व प्रकाशक – रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिंटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली–55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली–7 दूरभाष : 23857244 से प्रकाशित। सम्पादक : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, सह–सम्पादकः डॉ. देवेश प्रकाश आर्य